IJCRM

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का सर्वधर्म समभाव : एक सुक्ष्म अवलोकन

डॉ. विनय कुमार पटेल *

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ. विनय कुमार पटेल

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19721924

सारांश

भारत एक बहुधार्मिक, बहुसांस्कृतिक और विविधताओं से भरा देश है। यहाँ विभिन्न धर्मों का सह-अस्तित्व सदियों से रहा है। ऐसे में सर्वधर्म समभाव की अवधारणा भारतीय समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस विचार के प्रमुख प्रणेता और व्यावहारिक समर्थक महात्मा गांधी थे, जिन्होंने अपने जीवन एवं दर्शन के माध्यम से धर्मों के प्रति समान आदर और सहिष्णुता का आदर्श प्रस्तुत किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के महान नेता, विचारक और समाज सुधारक थे। उन्होंने जीवन में सत्य, अहिंसा और मानवता के आदर्शों को अपनाया। गाँधीजी के विचारों में सर्वधर्म समभाव का सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जिसका अर्थ है—सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान और समान दृष्टि रखना । गाँधीजी का मानना था कि सभी धर्म मानव को सत्य, प्रेम और नैतिकता का मार्ग दिखाते हैं, इसलिए किसी भी धर्म के प्रति घृणा या भेदभाव नहीं होना चाहिए। गांधी जी के सभी विचार समय-समय पर उनके सामने आने वाली परिस्थितियों और विभिन्न समस्याओं के समाधान खोज निकालने के फलस्वरूप विकसित हुए है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 21-03-2026
- **Accepted:** 16-04-2026
- **Published:** 24-04-2026
- **IJCRM:**5(2); 2026: 807-810
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

पटेल वि कु. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का सर्वधर्म समभाव : एक सुक्ष्म अवलोकन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2):807-810.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

KEYWORDS: सत्याग्रह, महात्मा गाँधी, सत्य, अहिंसा, सर्वधर्म समभाव, धार्मिक, समन्वय, मानवता, सहिष्णुता, संप्रदायवाद, वर्तमान, प्रासंगिकता।

© 2026 डॉ. विनय कुमार पटेल . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक विविधता में अनेक धर्म, परंपराएँ और मान्यताएँ समाहित हैं। ऐसे बहुधर्मी समाज में शांति एवं एकता बनाए रखने के लिए सर्वधर्म समभाव का सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी ने इस सिद्धांत को न केवल समझा, बल्कि अपने जीवन में उतारकर उसे एक जीवंत आदर्श बना दिया। महात्मा गांधी भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थापना के फलस्वरूप वर्तमान सभी विचारों, आदर्शों और संस्थाओं के पुनर्मूल्यांकन के लिए बाध्य हो गये। इस सम्पर्क का सर्वप्रथम प्रभाव स्वभावतः धार्मिक क्षेत्र पर पड़ा था, क्योंकि भारत की समस्त विचार धाराएं, आदर्श और संस्थाएं न्यूनाधिक रूप से धर्म से ही सम्बद्ध थीं।[1] इस प्रभाव के परिणाम स्वरूप ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज जैसे सुधारवादी सम्प्रदायों का विकास हुआ था। इन नये सम्प्रदायों के विकास के साथ ही सनातनी हिन्दू-समाज में भी हिन्दू धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों की पुनर्व्याख्या एवं पुननिर्वाचन के भी आन्दोलन शुरू हो गये थे। इसी के फलस्वरूप आर्य समाज की स्थापना हुई और श्रीरामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, रामतीर्थ तथा श्रीमती बेसेण्ट के नेतृत्व में थियोसोफिकल आन्दोलन ने हिन्दू धर्म की नयी व्याख्या प्रस्तुत की।

2. शोध उद्देश्य

शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत का अध्ययन करना, उनके धार्मिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करना तथा उनके जीवन में इस सिद्धांत के व्यवहारिक प्रयोगों को समझना और आधुनिक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

3. शोध पद्धति

यह शोध गुणात्मक, ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, क्योंकि इसमें संख्यात्मक आँकड़ों की अपेक्षा विचारों, सिद्धांतों और दर्शन का विश्लेषण किया गया है। इस शोध में मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। गांधीजी के मूल लेखन, जैसे उनके आत्मकथात्मक ग्रंथ सत्य के प्रयोग तथा हिन्द स्वराज, उनके पत्र, भाषण और प्रार्थना सभाओं के विवरण प्राथमिक स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न इतिहासकारों, विद्वानों और शोधकर्ताओं द्वारा लिखी गई पुस्तकें, शोध पत्र, लेख तथा पत्र-पत्रिकाएँ द्वितीयक स्रोत के रूप में प्रयुक्त किए गए हैं। इन सभी स्रोतों के माध्यम से गांधीजी के विचारों का समग्र और संतुलित अध्ययन किया गया है।

3. विश्लेषण

सर्वधर्म समभाव का अर्थ-

सर्वधर्म समभाव का अर्थ है—सभी धर्मों को समान दृष्टि से देखना, किसी भी धर्म को श्रेष्ठ या हीन न मानना तथा सभी धर्मों के प्रति सम्मान और सहिष्णुता रखना। महात्मा गांधी का मानना था कि सभी धर्म सत्य की ओर ले जाने वाले विभिन्न मार्ग हैं।[2] उनके अनुसार, धर्म का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को नैतिक, आध्यात्मिक और मानवतावादी बनाना है, न कि समाज में भेदभाव या संघर्ष उत्पन्न करना। गांधीजी के जीवन पर विभिन्न धर्मों का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने हिंदू धर्म से सत्य और अहिंसा का सिद्धांत ग्रहण किया, जबकि जैन धर्म से अहिंसा और अपरिग्रह की शिक्षा प्राप्त की। ईसाई धर्म से उन्होंने प्रेम और क्षमा की भावना को अपनाया तथा इस्लाम धर्म से भाईचारे और समानता की प्रेरणा ली। इस प्रकार गांधीजी ने सभी धर्मों के सार को अपने जीवन में आत्मसात किया और इसे अपने आचरण में उतारा।[3]

महात्मा गाँधी के विचारों में सर्वधर्म समभाव-

महात्मा गांधी ने अपने आश्रमों में सर्वधर्म समभाव को व्यावहारिक रूप दिया। उनकी प्रार्थना सभाओं में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि सभी धर्मों के ग्रंथों का पाठ किया जाता था। यह उनके इस विश्वास को दर्शाता है कि सभी धर्म समान हैं और सभी में ईश्वर का अंश विद्यमान है। वे सभी धर्मों के लोगों के साथ समान व्यवहार करते थे और किसी भी प्रकार के भेदभाव के विरोधी थे। गांधीजी ने हिंदू-मुस्लिम एकता को विशेष महत्व दिया।[4] वे हमेशा सांप्रदायिक सौहार्द के पक्षधर रहे और किसी भी प्रकार की धार्मिक हिंसा का विरोध किया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और उसके बाद भी उन्होंने अनेक बार उपवास और शांति के माध्यम से समाज में सद्भाव स्थापित करने का प्रयास किया। उनका यह प्रयास दर्शाता है कि वे केवल विचारों में ही नहीं, बल्कि व्यवहार में भी सर्वधर्म समभाव के सच्चे समर्थक थे।[5] सर्वधर्म समभाव का मूल विचार यह है कि सभी धर्म सत्य के विभिन्न मार्ग हैं।

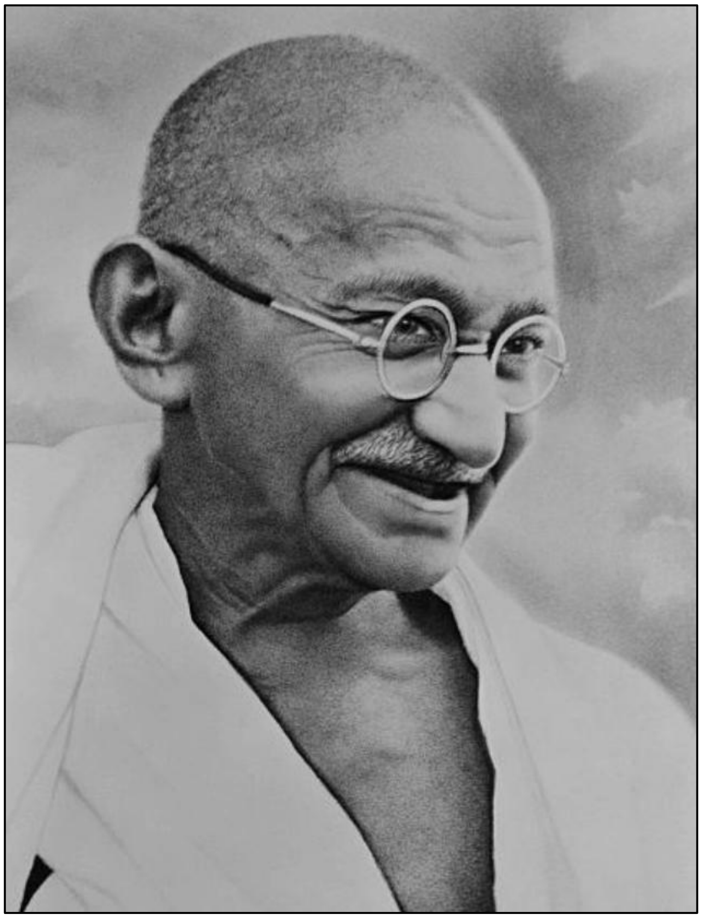

चित्र 1: गांधी जी का चित्र

गांधीजी के अनुसार, धर्म का वास्तविक उद्देश्य मानव को नैतिक और आध्यात्मिक रूप से उन्नत करना है। कोई भी धर्म दूसरों से श्रेष्ठ नहीं है, बल्कि सभी में सत्य का अंश है। धर्म का उपयोग मानवता को जोड़ने के

© 2026 डॉ. विनय कुमार पटेल . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

लिए होना चाहिए, न कि विभाजन के लिए। महात्मा गाँधी के समक्ष मूल समस्या सामप्रादायिक समन्जस को सुलझाने की रही अतः वे सम्पूर्ण धर्मावलाम्बियों को प्रेमरूपी सूत्र में बाधना चाहते थें। यह तभी संभव था जब एक धर्म वाला दूसरे धर्म वालो को अपने धर्म के समान आदर दे सके। उन्होंने सभी शक्ति के उपासकों को जो प्रेम के सार्वभौम नियत में विश्वास करते है, दूसरे धर्मो को अपने धर्म के समान ही श्रद्धा देते है तथा अपने धर्म की अपूर्णता को स्वीकार करते है' सत्य के उपासक होने के अधिकार से कोई सम्पूर्ण सत्य के अधिकारी होने का दावा नही कर सकता क्योंकि इसका अर्थ है ईश्वर हो जाना। इसीलिए उसे अपूर्णता की चेतना रखनी पड़ती है,यदि हर मानव अपूर्ण है, तो उसके द्वारा निर्मित धर्म भी अपूर्ण ही कहा जायेगा।[6] जितने की वेद। गांधीजी के लिए सभी एक ही लक्ष्य तक पहुँचने वाले भिन्न-भिन्न मार्ग हैं।

गांधीजी ने धर्म को तर्क से स्वीकार किया है इसलिए उनका मानना था कि मैं पुराने से पुराने शास्त्र की पवित्रता को भी अस्वीकार करने को तैयार हूँ, अगर वह मेरे तर्को से ग्रहण करने योग्य न हो। गाँधी जी को पूर्ण विश्वास था कि "अब तक हम लोगों ने धर्म और ईश्वर का अनुभव पूर्णता मे नही किया है।[7] मानव निर्मित धर्म अपूर्ण होने के कारण विकास की प्रक्रिया और प्रगति होती है अतः वे तर्क देते है कि यदि मानव निर्मित सभी धर्म अपूर्ण है तो तुलनात्मक रूप से किसी एक के गुण का प्रश्न ही नही उठता। सभी धर्म सत्य की अभिव्यक्तियाँ है और अपूर्ण होने के कारण उनमें गलतियों की संभावना है। अतः दूसरे धर्मो के समादार का अर्थ इसके दोषो का समादार नहीं और न अपने धर्म के आदर का अर्थ इसके दोषों को छिपाना है। प्रमुख बात यह है कि अपने धर्म को स्वीकार कर उसके समाहित दोषों को दूर करना। सभी धर्मो के समादार का मतलब है कि दूसरे धर्मो के गुणों को अपने धर्म में मिलाना यही हर व्यक्ति का कर्तव्य है।[8]

एक प्रश्न उठता है कि क्यों समस्त धर्मों के गुणों को एक सा समन्वित कर एक ही विश्व की स्थापना करें ? धर्मों की अनेकता की क्या आवश्यकता है? गांधीजी धर्मो की अनेकता का उन्मूलन न करके उसके सुधार की बात करते हैं। जिस प्रकार एक आत्म के रहते हुए भी शरीर की अनेकताओं को हम मिटा नहीं सकते,उसी प्रकार धर्मों की अनेकता को भी मिटा नहीं सकते। हम सिर्फ अनेकताओं के बीच एकता का अनुभव करते हैं।[9] उदाहरण स्वरूप गांधी जी कहते हैं कि-"सिर्फ अनेकताओं के बीच एकता क अनुभव करते हैं। उदाहरण स्वरूप भिन्न-भिन्न पुष्प हैं एक ही वृक्ष की अनन्त शाखाएँ और पत्तियाँ हैं।" वास्तव में फूल पूर्ण धर्म एक ही है जो अनिवर्यनीय है। मनुष्य निर्मित धर्म अनेक है जो विशेष दृष्टिकोण से सर्वधर्म सहिष्णु हिन्दू धर्म ही चिरकाल तक जीवित रह सकता है और सूर्य की तरह चमक सकता है। इस प्रकार से वे हिन्दू धर्म को दया व प्रेम का धर्म मानते है। जिनका विश्व मानव के किसी भी अंश के साथ विरोध नहीं है। इस अर्थ में इसे सार्वभौम धर्म माना जा सकता है। इसके बाद भी वे हिन्दू धर्म में समाहित दोषों, छूआछूत, जातिप्रथा, मन्दिरों में अभद्र व्यवहार जो हिन्दू धर्म के कलंक हैं। इन सबको दूर करने पर जोर देते हैं।[10] महात्मा गाँधी हिन्दू धर्म के उसी अंश को महत्व देते है, जो उनकी नैतिक आत्मा को पसन्द है। इसी प्रकार गांधी जी पूर्ण धर्म के सम्बन्ध में रहस्यवादी हैं। उनके अनुसार पूर्ण धर्म एक है और वह निवर्चनीय है।

प्रश्न उठता है कि क्या समस्त धर्मों के सारतत्व को जमा कर एक विश्व मानव धर्म की स्थापना हो सकती है, क्या यह व्यवहारिक हो सकेगा? यह धर्म मानव भावनाओं को सन्तुष्ट कर सकेगा? इसका उत्तर नकारात्मक ही होगा, क्योंकि हर मनुष्य की अपनी-अपनी आस्थाएं होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति धर्म को अपने अपने रंग में देखना चाहता है। यदि धर्म की स्थापना विशुद्धि बुद्धि के आधार पर होगा तो यह कुछ लोगों तक ही सीमित रह जायेगा, यदि सामूहिक रूप नहीं ले पाता, तो इसका कोई लाभ समाज को नहीं मिल सकता। अतः इसके व्यवहारिक होने में सन्देह है। महात्मा गाँधी व्यावहारिक आदर्शवादी थे, इसलिए उनका समन्यवय और उनकी अद्वैत भावना व्यवहारिक स्तर की थी। उन्होंने हिन्दू संस्कृति की तरह समन्वय पर जोर देते हैं। उनके चिन्तन का वह लक्ष्य है जो श्री अरविन्द घोष का था कि, मानव मानसिक पवित्रता, शुद्धि और विकास पर जोर दे तो वह शुद्ध धर्म को प्राप्त कर सकता है। उसके बाद वह पुनः अपने जीवन द्वारा जन सामान्य को ईश्वर तुल्य सेवा कर्म द्वारा मानव समाज का मानसिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक उत्थान करने में सहयोग करे, क्योंकि मानव सेवा से बढ़कर दूसरा कोई विश्व धर्म नहीं है।

महात्मा गाँधी के सर्वधर्म समभाव की वर्तमान में प्रासंगिकता

भारत विभिन्न संस्कृतियों की संगमस्थली माना जाता है, यहाँ एकता में अनेकता के दर्शन होते थे, परन्तु आज ये एकता सिर्फ सैद्धान्तिक रूप में देखी जाती है। व्यावहारिक रूप में एकता अदृश्य सी होती जा रही है। गाँधी जी का सर्वधर्म समभाव का विचार आज इस एकता रूपी मंत्र को फिर से वापस लाने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज विभिन्न धर्मों के मानने वाले अपने-अपने धर्मों की श्रेष्ठता सिद्ध करने में दूसरे धर्मावलम्बियों को हानि पहुँचाने में लगे रहते हैं परन्तु गाँधी जी का विचार है सभी धर्म एक समान है हमें सभी धर्मों का आदर करना चाहिए, यह अनुकरणीय है, यदि वर्तमान समय में गाँधी जी की इस विचार का अनुसरण किया तो निश्चय ही धार्मिक मतभेद की समाप्ति हो सकती है।[11] वर्तमान समय में मनुष्य का चरित्र बल घटता जा रहा है, वह सचरित्र जीवन जीने में असमर्थ सा होता जा रहा है। गाँधी जी का धर्म दर्शन श्रेष्ठ चरित्र निर्माण की शिक्षा देता है। वास्तव में यदि गाँधी जी के धार्मिक विचार को महत्व दिया जाय तो आज भी चारित्रिक पतन को रोका जा सकता है। वर्तमन समय में अनेंक देवी देवताओं का प्रचलन बढ़ा है तथा इसके साथ सभी मत अपने-अपने भगवान को श्रेष्ठ मानते हैं, परन्तु गाँधी जी का कहना था कि शास्त्रों का शनि विद का निचोड़ इतना ही है कि ईश्वर है और वह एक ही है, कुरान, बाइबिल का भी यही निचोड़ है, कोई यह न कहे कि बाइबिल में तीन भगवान बनाए हैं, वहा भी भगवान एक ही है।[12] स्पष्ट है कि गांधी जी ने विभिन्न धर्मों के अन्तर्गत ईश्वर के विभिन्न नामों पर गम्भीरतापूर्वक विचार एवं अध्ययन किया और उन्होंने पाया कि सब धर्मों का ईश्वर एक ही है। केवल उसके नाम अनेक हैं। कहा जा सकता है कि इस दशा में गाँधी जी की दृष्टि हिन्दू धर्म से बढ़कर विश्व धर्म तक पहुंची। आज देश के सामने राष्ट्र स्तर पर ही समस्याएं नहीं है बल्कि विश्व स्तर पर समस्याएं बढ़ गयी हैं इसलिए गांधी जी की 'ईश्वर एक है' इस धारणा की वर्तमान में महत्वपूर्ण प्रासंगिकता है।

आज नैतिकता का पतन चरमोत्कर्ष पर है। गांधी जी का एकादश व्रत पालन का सिद्धान्त नैतिकता की नीव को सुदृढ़ करने का माध्यम है।, गांधी जी मानते हैं कि ईश्वर की सत्य, प्रेम तथा समस्त नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का मूल आधार है। ईश्वर ही पूर्ण एवं सर्वोच्च शुभ है।[13] गांधी जी के अनुसार मनुष्य को सेवा तथा आत्म संयम द्वारा इसी सर्वोच्च शुभ को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। गांधी जी का यह विचार वर्तमान् समय में नैतिकता की पुनःस्थापना के लिए निश्चय ही प्रासंगिक है। आज हमारे देश में सम्प्रदायवाद की समस्या एक गम्भीर चुनौती बनी हुई है? धार्मिक कट्टरवाद का बोलबाला है, गांधी जी के अनुसार सभी धर्मों का सार तत्व एक ही है। सभी धर्म, नैतिकता संयम, प्रेम, सहयोग,

© 2026 डॉ. विनय कुमार पटेल . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भाइचारे की शिक्षा देते हैं, जब सभी धर्मों का सार तत्व एक ही है तो फिर धार्मिक मतभेद की आवश्यकता ही क्या है। गाँधीजी का मानना है कि सभी मनुष्य में एक ही आत्मा है। जब सभी मनुष्यों में एक ही आत्मा है तो सभी एक समान हैं तो कोई हिन्दू, कोई मुसलमान, कोई सिख या कोई ईसाई कैसे हो सकता है। गाँधी जी की दृष्टि से एक दूसरे के धर्म के सार तत्व को समझकर उसका अनुकरण करे तो निश्चय ही सम्प्रदायवाद, धार्मिक कट्टरता समाप्त हो सकती है।14 आज के वर्तमान समाज में जहाँ भेद-भाव इतना बढ़ गया है कि, मनुष्य ही मनुष्य का भरण और शोषण कर रहा है, वहाँ गांधी जी के सर्वधर्म समभाव का विचार निश्चय ही प्रासंगिक है, इससे सभी धर्मों के लोग एक दूसरे के धर्मों का सम्मय करना सीख सकते हैं। अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि गांधी जी के सर्वधर्म समभाव की वर्तमान समय व समाज में महत्वपूर्ण प्रासंगिकता है।

4. निष्कर्ष

अततः कहा जा सकता है कि, महात्मा गाँधी का सर्वधर्म समभाव सिद्धांत मानवता, प्रेम और सहिष्णुता पर आधारित है। यह हमें सिखाता है कि सभी धर्मों का सम्मान करके ही समाज में शांति और सद्भाव स्थापित किया जा सकता है। आज के समय में जब दुनिया कई प्रकार के धार्मिक और सांस्कृतिक संघर्षों का सामना कर रही है, तब गाँधीजी का यह विचार मानव समाज के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। यदि हम सर्वधर्म समभाव की भावना को अपने जीवन में अपनाएँ, तो एक शांतिपूर्ण, समरस और मानवीय समाज का निर्माण संभव है। गांधी जी के सर्वधर्म समभाव की वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिकता बनी है। यदि कोई व्यक्ति गांधी जी के जीवन तथा कर्त्तव्य को समझना चाहता है तो उसे उनके आध्यात्मिक विचारों एवं आदर्शों को अन्याय तथा निरंकुशता के विरूद्ध चलाये गये उनके संघर्षों और क्रियान्वित किये गये सुधारात्मक कार्यक्रमों के प्रकाश में ही समझने का प्रयत्न करना होगा।

संदर्भ

1. रोला आर. महात्मा गाँधी जीवन और दर्शन. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 1976. पृ. 21.
2. गांधी एम. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा. अहमदाबाद: नवजीवन मुद्रणालय; 2008. पृ. 62.
3. गांधी एम. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा. अहमदाबाद: नवजीवन मुद्रणालय; 2008. पृ. 63–64.
4. राय एम.एस. भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद. नई दिल्ली; 2009. पृ. 279.
5. राय एम.एस. भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद. नई दिल्ली; 2009. पृ. 266–267.
6. पाण्डेय पी. के.. गांधी का आर्थिक एवं सामाजिक चिंतन. 2011. पृ. 24–25.
7. गांधी एम. हिन्द स्वराज. दिल्ली: शिक्षा भारती; 2020. पृ. 35–36.
8. गांधी एम. हिन्द स्वराज. दिल्ली: शिक्षा भारती; 2020. पृ. 38–39.
9. चटर्जी एम. Gandhi: Religious Thought. London: Macmillan Press; 1983. पृ. 15.
10. चटर्जी एम. Gandhi: Religious Thought. London: Macmillan Press; 1983. पृ. 15–16.
11. नागर पी. एल. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक चिंतन. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी; 1980. पृ. 348.
12. नागर पी. एल. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक चिंतन. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी; 1980. पृ. 348–349.
13. नागर पी.एल. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनैतिक चिंतन. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी; 1980. पृ. 349.
14. पाण्डेय पी. के.. गांधी का आर्थिक एवं सामाजिक चिंतन. 2011. पृ. 25–26.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the corresponding author

डॉ. विनय कुमार पटेल, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदा, उत्तर प्रदेश में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। वे उच्च शिक्षा एवं शोध कार्यों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं। उनके शोध क्षेत्र में सामाजिक विज्ञान से संबंधित समकालीन मुद्दे शामिल हैं, तथा वे शिक्षण, मार्गदर्शन और अकादमिक लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

© 2026 डॉ. विनय कुमार पटेल . This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/